भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 2187

01 अगस्त, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

आयुर्वेद को बढ़ावा देना

2187. डॉ. निशिकान्त दुबे:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सरकार द्वारा देश के उन क्षेत्रों में आयुर्वेद और आयुष की अन्य पद्धतियों के संवर्धन हेतु किए गए प्रयासों का ब्यौरा क्या है, जहां जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर निर्भर है; और

(ख) देश में योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी आदि से संबंधित राज्य/संघ राज्यक्षेत्र-वार, विशेषकर झारखंड में, कितने संस्थान और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाने का प्रस्ताव है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) आयुष स्वास्थ्य सेवा पद्धति के प्रचारतथा प्रसार संबंधी अधिदेश को पूरा करने के उद्देश्य से, यह मंत्रालय आयुष में सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) के प्रचार हेतु एक केंद्रीय क्षेत्रीय योजना कार्यान्वित करता है। इस योजना के अंतर्गत, यह मंत्रालय राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर आरोग्य मेले, योग फेस्ट/उत्सव, आयुर्वेद पर्व आयोजित करता है, आयुष पद्धति के महत्वपूर्ण दिवस मनाता है, स्वास्थ्य मेलों/प्रदर्शनियों आदि में भाग लेता है, सेमिनारों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करता है और स्वास्थ्य देखभाल एवं उपचार की आयुष पद्धति के संबंध में नागरिकों में जागरूकता उत्पन्न करने हेतु मल्टीमीडिया अभियान आदि चलाता है।

इसके साथ-साथ, मंत्रालय देश में आयुष पद्धति के विकास और संवर्धन हेतु राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों के माध्यम से राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केंद्रीय प्रायोजित योजना को कार्यान्वित कर रहा है और उन्हें उनकी राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएएपी) में प्राप्त प्रस्तावों के अनुसार वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारें एनएएम के दिशानिर्देशों के अनुसार राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएएपी) के माध्यम से प्रस्ताव प्रस्तुत करके वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकती हैं।

इसके अलावा, आयुर्वेद और आयुष की अन्य पद्धतियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, आयुष मंत्रालय ने **संलग्नक-I** के विवरण के अनुसार, आयुष (आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी) की 05 (पांच) अनुसंधान परिषदें और 12 (बारह) राष्ट्रीय संस्थान स्थापित किए हैं। ये परिषदें/संस्थान अपने परिधीय संस्थानों/इकाइयों/केंद्रों के साथ सामान्य बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी), प्रजनन और बाल स्वास्थ्य (आरसीएच) ओपीडी, जराचिकित्सा ओपीडी, गैर-संचारी रोग (एनसीडी) क्लिनिक आदि के माध्यम से उपचार प्रदान कर रहे हैं और आयुष को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता

गतिविधियों में भी संलग्न हैं। आयुष मंत्रालय के तहत अनुसंधान परिषदों और राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा आयुष को बढ़ावा देने संबंधी कार्यकलापों का विवरण क्रमशः **संलग्नक-II** और **संलग्नक-**III में दिया गया है।

(ख) वर्तमान में, देश में योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी आदि से संबंधित नए संस्थान और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने संबंधी कोई प्रस्ताव मंत्रालय में विचाराधीन नहीं है।

*****

संलग्नक-I

आयुष मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत अनुसंधान परिषदों और राष्ट्रीय संस्थानों का विवरण

अनुसंधान परिषदें:

क्रम सं.	**अनुसंधान परिषद का नाम**
1	केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस)
2	केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरवाईएन)
3	केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम)
4	केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस)
5	केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच)

राष्ट्रीय संस्थान:

क्रम सं.	**संस्थान का नाम**
1	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) • जयपुर • पंचकुला (उपग्रह केंद्र)
2	• अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) • नई दिल्ली • गोवा (अनुषंगी केंद्र)
3	राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आरएवी), दिल्ली
4	आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), जामनगर
5	मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई), नई दिल्ली
6	राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन), पुणे
7	• राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान (एनआईयूएम) • बेंगलूरू • गाजियाबाद (अनुषंगी केंद्र)
8	राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस), चेन्नई
9	• राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान (एनआईएच) • कोलकाता • नरेला (अनुषंगी केंद्र)
10	राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान (एनआईएसआर), लेह
11	पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच), शिलांग
12	पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (एनईआईएएफएमआर), पासीघाट

संलग्नक-II

अनुसंधान परिषदों द्वारा आयुष के संवर्धन हेतु की गई गतिविधियाँ

(1) आयुष मंत्रालय के तत्वावधान में केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), अपने 30 सहायक संस्थानों के नेटवर्क के माध्यम से सूचना शिक्षा और संचार (आईईसी) गतिविधियों के माध्यम से आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए नैदानिक देखभाल प्रदान करती है और जागरूकता गतिविधियों में संलग्न है।

सीसीआरएएस आम जनमानस के बीच अंग्रेजी, हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के माध्यम से आयुर्वेद पद्धति को लोकप्रिय बनाने में लगा हुआ है, जिसका प्रचार राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय आरोग्य मेलों, स्वास्थ्य शिविरों, प्रदर्शनियों, एक्सपो आदि के माध्यम से व्यापक रूप से किया जाता है, और सीसीआरएएस के आउटरीच कार्यक्रमों जैसे अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) अनुसंधान कार्यक्रम, जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम (टीएचसीआरपी) आदि के माध्यम से देश के विभिन्न राज्यों में अपने 30 सहायक संस्थानों के माध्यम से भी किया जाता है। परिषद की वेबसाइट पर भी सामान्यतः सूचना, शिक्षा और संचार सामग्री उपलब्ध है और यह अन्य महत्वपूर्ण वेबसाइटों से हाइपरलिंक की गई है जो व्यापक उपयोगिता के लिए जानकारी प्रदान करती हैं।

परिषद की तीन पत्रिकाएँ नामत: जर्नल ऑफ ड्रग रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज (जेडीआरएएस), जर्नल ऑफ रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज (जेआरएएस), और जर्नल ऑफ इंडियन मेडिकल हेरिटेज (जेआईएमएच) हैं। ये पत्रिकाएँ सार्वजनिक डोमेन में इलेक्ट्रॉनिक रूप से निःशुल्क उपलब्ध हैं ताकि शोध के परिणामों को आम जनमानस तक पहुँचाया जा सके। सीसीआरएएस, आम जनमानस के लिए सामान्य भाषाओं में शोध परिणामों के प्रसार हेतु तिमाही आधार पर सीसीआरएएस बुलेटिन भी प्रकाशित कर रहा है। अब तक, परिषद ने पुस्तकें, मोनोग्राफ और तकनीकी रिपोर्टें प्रकाशित की हैं, और आयुर्वेद के शोध परिणामों और गुणों को व्यापक रूप से प्रचारित करने के लिए इन्हें बेचा या वितरित किया जा रहा है।

(2) आयुष मंत्रालय के अंतर्गत केन्द्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) सिद्ध चिकित्सा पद्धति में अनुसंधान कर रही है और सीसीआरएस के 9 सहायक संस्थानों/इकाइयों के माध्यम से विभिन्न लोगों के लिए स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं प्रदान करती है।

(3) केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम) ने देश में यूनानी चिकित्सा को बढ़ावा देने और लोकप्रिय बनाने के लिए विभिन्न तरीकों से कई कदम उठाए हैं, जैसे कि परिषद के 21 नैदानिक संस्थानों/इकाइयों द्वारा संचालित सामान्य ओपीडी, आरसीएच ओपीडी, जेरिएट्रिक ओपीडी, एनसीडी क्लिनिक आदि के माध्यम से उपचार प्रदान करना। यह परिषद, आरोग्य, स्वास्थ्य मेलों, स्वास्थ्य शिविरों और प्रदर्शनियों आदि के माध्यम से भी यूनानी चिकित्सा को बढ़ावा दे रही है। स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम और नैदानिक मोबाइल अनुसंधान कार्यक्रम के साथ-साथ, परिषद द्वारा अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी)/टीएसपी मोबाइल स्वास्थ्य कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत, विभिन्न रोगों के निवारक पहलुओं के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करने और परिषद के विभिन्न केंद्रों के माध्यम से रोगियों को उपचार प्रदान करने के लिए एससी/एसटी आबादी वाले गांवों का चयन किया गया है।

(4) केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच), देश भर में अपने 27 संस्थानों/इकाइयों और 6 उपचार केंद्रों के माध्यम से होम्योपैथी में वैज्ञानिक आधार पर अनुसंधान कर रही है, जो उपर्युक्त क्षेत्रों में अनुसंधान करते हैं।

होम्योपैथी को बढ़ावा देने के लिए, सीसीआरएच ने विभिन्न सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के माध्यम से होम्योपैथी को मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था से जोड़ने की पहल की है, जो निम्नलिखित हैं:-

• परिषद के अंतर्गत 55 गाँवों को गोद लेकर 11 संस्थानों के माध्यम से स्वास्थ्य रक्षा कार्यक्रम (एसआरपी) चलाया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत स्थानीय लोगों को उनके स्थान पर ही स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं।

• अनुसूचित जाति घटक योजना (एससी घटक योजना) उनके सीसीआरएच के अंतर्गत 21 केंद्रों पर अनुसूचित जाति बहुल गांवों में स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए गए, जिसमें 40 गांव शामिल थे।

• केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच), देश भर में होम्योपैथी के प्रचार-प्रसार के लिए जागरूकता संबंधी गतिविधियों में भाग लेती है, उनका आयोजन करती है और समन्वय करती है।

• सीसीआरएच आयुष मंत्रालय द्वारा आम जनमानस के बीच होम्योपैथी को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय आरोग्य मेलों/स्वास्थ्य शिविरों/प्रदर्शनियों में नियमित रूप से भाग ले रहा है।

• सूचना शिक्षा एवं संचार कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, परिषद ने जनता के लिए सूचना एवं शिक्षा सामग्री विकसित की है, जिसे प्रदर्शनियों/स्वास्थ्य मेलों/सेमिनारों आदि में जनता को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

• इन क्षेत्रों में होम्योपैथी को लोकप्रिय बनाने के लिए अनुसूचित जाति बहुल गांवों में स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाते हैं।

• सीसीआरएच सोशल मीडिया जैसे फेसबुक पेज, ट्विटर अकाउंट आदि के माध्यम से भी होम्योपैथी को बढ़ावा देता है।

• अपने केंद्रों के माध्यम से पोषण महा अभियान में भाग लेना।

• आजादी का अमृत महोत्सव से संबंधित गतिविधियों में भाग लेना।

• उपरोक्त संस्थानों/इकाइयों और उपचार केंद्रों के ओपीडी/आईपीडी के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना।

(5) देश में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरवाईएन) द्वारा किए जा रहे प्रयास निम्नानुसार हैं:

केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (सीआरआईवाईएन):-

• आंध्र प्रदेश - 01
• असम - 01
• छत्तीसगढ़ - 01
• दिल्ली - 01
• हरियाणा - 01
• कर्नाटक - 01
• केरल - 01
• ओडिशा - 01

योग के माध्यम से माइंड बॉडी इंटरवेंशन के लिए 10 केंद्र: सीसीआरवाईएन ने योग के माध्यम से माइंड बॉडी इंटरवेंशन के लिए केंद्र (सीएमबीआईवाई) की स्थापना की है।

• एम्स दिल्ली - 01
• एम्स भोपाल - 01
• एम्स जोधपुर - 01

- एम्स रायपुर, छत्तीसगढ़ - 01
- एम्स, एनसीआई, झज्जर, हरियाणा - 01
- एम्स ऋषिकेश, उत्तराखंड - 01
- पीजीआई चंडीगढ़ - 01
- एस-व्यासा, बेंगलुरु - 01
- निम्हास, बेंगलुरु - 01
- बीबीनगर, तेलंगाना - 01

संलग्नक-III

<u>राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा आयुष को बढ़ावा देने के लिए की गई गतिविधियों का विवरण</u>

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) आयुर्वेद में आयुर्वेदिक शिक्षा का एक शीर्ष संस्थान है और अपने विशाल अवसंरचना, कर्मचारियों की स्थिति और अन्य विस्तारित गतिविधियों के कारण पूरे भारत के छात्रों को आकर्षित करता है। यह अस्पताल, राष्ट्रीय अस्पताल एवं स्वास्थ्य सेवा प्रदाता प्रत्यायन बोर्ड से मान्यता प्राप्त है, जिसमें एक दर्जन से अधिक विशिष्ट क्लीनिक, विश्व स्तरीय पंचकर्म इकाई, केंद्रीय प्रयोगशाला, पूरी तरह सुसज्जित ऑपरेशन थिएटर आदि हैं। अस्पताल की सेवाओं का और अधिक विस्तार किया जा रहा है जिसके लिए परिसर में एक बहुमंजिला भवन का निर्माण किया जा रहा है। विभिन्न प्रचार गतिविधियों में आईईसी सामग्री का वितरण, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ और सेमिनारों का आयोजन, विभिन्न देशों में अपने विशेषज्ञों को भेजकर विश्व स्तर पर आयुर्वेद के प्रचार में आयुष मंत्रालय की सहायता करना आदि भी शामिल हैं।

एनआईए में 300 बिस्तरों वाला एक अस्पताल है जिसमें पंचकर्म, क्षार सूत्र, मधुमेह क्लिनिक, नशामुक्ति केंद्र आदि जैसे विभिन्न विशेषज्ञता केंद्र हैं, जिनके माध्यम से विभिन्न रोगों और विकारों का उपचार, परामर्श, प्रबंधन आदि किया जाता है। केंद्रीय प्रयोगशाला में अधिकांश औषधि सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। इस संस्थान में एक सैटेलाइट अस्पताल भी है जहाँ ओपीडी सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। राजस्थान राज्य में अनुसूचित जाति की आबादी के लाभ के लिए एससीएसपी योजना के तहत एक अलग अस्पताल शुरू किया गया है, जिसमें वर्तमान में ओपीडी सेवाएँ उपलब्ध हैं। इन सभी गतिविधियों को हर साल और अधिक दवाओं, नैदानिक सुविधाओं, अस्पताल के लिए आवश्यक उपकरणों और यंत्रों, जनशक्ति आदि के साथ सुदृढ़ किया जा रहा है। यह संस्थान हैंडबिल, पैम्फलेट, सूचना पुस्तिकाएं वितरित करता है जिनमें आयुर्वेद पर प्रचार सामग्री होती है जैसे कि अच्छे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के प्रबंधन के लिए क्या करें और क्या न करें, दैनिक दिनचर्या, पंचकर्म चिकित्सा, जीवनशैली प्रबंधन, नशामुक्ति, योग, व्यायाम आदि और संस्थान की विभिन्न शैक्षणिक, रोगी देखभाल और अन्य गतिविधियों के संबंध में भी जानकारी होती है। ये आईईसी सामग्रियां संस्थान के अस्पतालों में मरीजों, उनके परिचारकों को तथा देश में विभिन्न आरोग्य मेलों के आयोजन के दौरान वितरित की जाती हैं। इस संस्थान ने, शहर में और दूरदराज के इलाकों में चिकित्सा शिविरों के दौरान विभिन्न आयुर्वेद जागरूकता शिविर, उपचार शिविर, मेले आदि का भी आयोजन किया है। ये गतिविधियाँ आम जनता में आयुर्वेद के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने और उसकी लोकप्रियता बढ़ाने में मदद करती हैं।

पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच) ने आयुर्वेद, होम्योपैथी और योग आदि आयुष चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। इस संबंध में, संस्थान नियमित रूप से संस्थान के अस्पतालों (ओपीडी और आईपीडी दोनों) में निःशुल्क परामर्श प्रदान करता है और गाँवों, स्कूलों, सरकारी सैन्य कर्मियों और सामुदायिक स्तर पर निःशुल्क चिकित्सा एवं जागरूकता शिविर आयोजित करता है। एनईआईएएच ने राष्ट्रीय सेमिनार/कार्यशालाएँ, पैनल चर्चाएँ, ऑल इंडिया रेडियो, शिलांग में अंग्रेजी, हिंदी और क्षेत्रीय भाषा (खासी) में "डॉक्टर से मिलें" कार्यक्रम, और दूरदर्शन केंद्र, शिलांग में आयुर्वेद पर टीवी वार्ता कार्यक्रम आदि का आयोजन किया है। एनईआईएएच ने आयुर्वेद और होम्योपैथी को बढ़ावा देने के लिए मेघालय राज्य के पूर्वी खासी हिल्स जिले के स्मित क्षेत्र में आयुर्वेद और होम्योपैथी में एक परिधीय ओपीडी भी शुरू की है। संस्थान ने प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जनमन) कार्यक्रमों के अंतर्गत स्वास्थ्य शिविर भी आयोजित किए। यह संस्थान आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं शल्य चिकित्सा स्नातक (बीएएमएस) और होम्योपैथिक चिकित्सा एवं शल्य चिकित्सा स्नातक (बीएचएमएस) पाठ्यक्रम, एक वर्षीय

पंचकर्म तकनीशियन प्रमाणपत्र भी संचालित कर रहा है। एनईआईएएच पड़ोसी राज्यों के चिकित्सा अधिकारियों (आयुर्वेद) को पंचकर्म चिकित्सा प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), जामनगर, जामनगर शहर की विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है। यह संस्थान, सभी सुविधाओं और उच्च गुणवत्ता वाली दवाओं से सुसज्जित एक अस्पताल संचालित करता है। इस संस्थान में राष्ट्रीय परीक्षण एवं अंशांकन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल) से मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाएँ हैं जो बीमार समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। यह सब मामूली लागत पर किया जाता है।

अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), नई दिल्ली ने शिक्षा, रोगी देखभाल और अनुसंधान के माध्यम से आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ शुरू की हैं।

क. शिक्षा:

• यह संस्थान आयुर्वेद के बारह विषयों में स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्रदान करता है।

• यह संस्थान बौद्धिक चर्चा को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर आयुर्वेद के एकीकरण और प्रचार-प्रसार की कार्यनीति बनाने के लिए समय-समय पर राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन करता है।

• इस संस्थान ने विद्वानों के बीच नवाचार और उद्यमिता के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए आईसीएआईएनई के माध्यम से स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण किया है।

ख. रोगी देखभाल:

• अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान में 200 बिस्तरों वाला तृतीयक देखभाल एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पताल है जिसमें कार्यात्मक आईसीयू है और प्रतिदिन लगभग 1500 रोगी आते हैं।

• इस संस्थान ने एकीकृत ऑन्कोलॉजी, वक्ष रोग, चयापचय रोग, जीवनशैली रोग, रुमेटोलॉजी, त्वचा क्लीनिक स्थापित किए हैं।

• इस संस्थान ने 44 विशिष्ट बाह्य रोगी विभाग स्थापित किए हैं, जिनके माध्यम से एकीकृत उपचार दिए जा रहे हैं।

• एआईआईए ने भारत भर में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों जैसे भारत के सर्वोच्च न्यायालय का परिसर, लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक प्रशिक्षण अकादमी, मसूरी, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी केवड़िया, गुजरात, आईआईटी दिल्ली में विस्तार केंद्र स्थापित किए हैं।

• एआईआईए ने एम्स, झज्जर में कार्यात्मक एकीकृत कैंसर क्लिनिक और अनुसंधान केंद्र, और सफदरजंग अस्पताल, वीएम मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली में एकीकृत चिकित्सा की स्थापना की है।

ग. अनुसंधान:

• अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान ने अपने अधिदेश में उच्च गुणवत्ता वाले साक्ष्य उत्पन्न करने के लिए मौजूदा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकों/दिशानिर्देशों के अनुरूप उन्नत अनुसंधान पद्धति के माध्यम से आयुर्वेद चिकित्सा की वैधता स्थापित करने पर केंद्रित अंतःविषय अनुसंधान को प्राथमिकता दी है।

पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (एनईआईएएफएमआर) ने वर्ष 2024-25 में 30 छात्रों की प्रवेशक्षमता के साथ एक आयुर्वेद महाविद्यालय शुरू किया है। इसके अलावा, स्वास्थ्य शिविर और राष्ट्रीय कार्यक्रम जैसी विभिन्न गतिविधियाँ नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं।

राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस), चेन्नई, बहुआयामी दृष्टिकोण के माध्यम से सिद्ध चिकित्सा पद्धति को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है और लोकप्रिय बनाता है, जिसमें नैदानिक सेवा वितरण, आउटरीच, शैक्षणिक जुड़ाव और एकीकृत सहयोग पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आरएवी), गुरु-शिष्य परम्परा की पारंपरिक शिक्षण पद्धति के अंतर्गत एक वर्षीय पूर्णकालिक पाठ्यक्रम, राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (सीआरएवी) प्रमाणपत्र प्रदान करता है। आरएवी आयुर्वेदिक चिकित्सकों के लिए एक कार्यक्रम है और आयुर्वेद शिक्षा एवं अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान (एनआईएच) ने होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित प्रयास किए हैं:

• राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, जो ब्लॉक जीई, सेक्टर 3, साल्ट लेक में स्थित है। यह संस्थान 100 बिस्तरों वाले एनएबीएच मान्यता प्राप्त अस्पताल में 13 ओपीडी संचालित कर रहा है। एनआईएच, कोलकाता में बीएचएमएस (स्नातक) पाठ्यक्रम में 126 छात्रों और एमडी (होम्योपैथी) (स्नातकोत्तर) पाठ्यक्रम में 47 छात्रों की प्रवेश क्षमता है।
• ग्रामीण रोगियों की सेवा के लिए, एनआईएच, पश्चिम बंगाल में और उसके आसपास 10 परिधीय ओपीडी संचालित कर रहा है।
• राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, नरेला, नई दिल्ली में स्थित है और यह नरेला तथा उसके आसपास के रोगियों की सेवा के लिए एनआईएच, कोलकाता का एक विस्तार केंद्र है। एनआईएच, दिल्ली में एमडी (होम्योपैथी) (पीजी) पाठ्यक्रम में प्रवेश क्षमता 49 छात्रों की है।
• एनआईएच, होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के संबंध में लोगों को जागरूक करने के लिए आरोग्य मेला, गंगासागर मेला, स्कूल स्वास्थ्य जाँच आदि में भाग लेता है।
• होम्योपैथी पर सूचना एवं संचार सामग्री का वितरण, बुलेटिन और समकक्ष-समीक्षित पत्रिकाओं का प्रकाशन आदि।

एनआईएच, कोलकाता प्रत्येक मंगलवार को सेंटेनरी अस्पताल, श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता में मुख्यधारा की चिकित्सा के साथ-साथ होम्योपैथिक परामर्श भी प्रदान करता है।

राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान (एनआईयूएम), बैंगलूरू, सरकार द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रमों, जैसे आरोग्य मेले और स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों आदि में नियमित रूप से भाग लेता है। प्राथमिक और द्वितीयक स्वास्थ्य सेवा में आयुष केंद्रों की सह-स्थापना करता है। गुणवत्ता विनियमन सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न पद्धतियों की भेषजसंहिता प्रकाशित की गई हैं।